रामपन

RAMNESS

पार्ट–3

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आह्वाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट– III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516399, 09313055063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से रामराज्य जैसी खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वाहन मिशन

वैबसाईट देखें :
www.ramrajyaahwahan.com

नोट : *आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया हैं। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।*

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

A1 & B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद
फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आजाएगा और फिर धीरे-धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरू करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।

निमर्ल होकर शोभा देती है।

- जल के कम होने पर मछलियॉ जैसे व्याकुल होती है वैसे ही मूर्ख, विवेक शून्य गृहस्थ भी धन के बिना व्याकुल हो जाता है।

कि0का0 15 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

- बिना बादलों का निर्मल आकाश ऐसे ही सुशोभित होता है जैसे भगवद् भक्त सब आशाओं को छोडकर सुशोभित होते हैं।
- जैसे शरद ऋतु में कहीं कहीं थोड़ी थोड़ी विरले स्थानों में वर्षा होती है ठीक ऐसे ही कोई विरले ही मेरी (भगवान) की भक्ति पाते हैं।

कि0का0 15 (5)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

- जैसे ज्ञान की 5 इन्द्रियां होती हैं वैसे ही 5 इन्द्रियां सुख भी होते हैं। शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध।
- जैसे शरदऋतु अर्थात सुहावना मौसम पाकर राजा, तपस्वी, व्यापारी, भिखारी, क्रमशः विजय, तप, व्यापार, भिक्षा के लिए निकल पडते हैं मगर हरि भक्ति पाकर चारों आश्रम वाले नाना प्रकार के साधन रुपी श्रमों का त्याग कर देते हैं।

कि0का0 16

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

- जैसे जल में मछलियां सब प्रकार से सुखी रहती हैं ऐसे ही श्री हरि की शरण में चले जाने पर एक

भी बाधा नहीं रहती।

- जैसे कमलों के फूलने से तालाब शोभा देता है वैसे ही निर्गुण ब्रह्म सगुण होने पर शोभा देता है।

कि0का0 16 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

- संतो का दर्शन पापों को हर लेता है ठीक वैसे जैसे शरद ऋतु के ताप को रात में चन्द्रमा हर लेता है।

कि0का0 16 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

- भगवद भक्त भगवान को पाकर उनके निमेष दर्शन करते हैं जैसे चकोरों के समुदाय चन्द्रमा को देखकर टकटकी लगा लेते हैं।
- ब्राह्मण के साथ वैर करने से कुल का नाश हो जाता है।

कि0का0 16 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सदगुरु के मिल जाने पर सन्देह तथा भ्रम के सारे समूह ऐसे ही नष्ट हो जाते हैं जैसे कि वर्षा ऋतु के कारण भर गये पृथ्वी पर जीव शरद ऋतु को पाकर नष्ट हो जाते हैं।

कि0का0 17

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे देव आपकी माया अत्यन्त ही प्रबल है। आप जब दया करते है, हे राम तभी यह छूटती हें। हे स्वामी स्त्री का नयन बाण जिसको न लगा हो, जो भयंकर कोध रुपी

अंधेरी रात में भी जागता रहता है (अर्थात क्रोध में अन्धा नहीं होता है), जिसने लोभ से अपना गला नहीं बंधाया हो वह तो प्रभु आपके समान ही है। ये गुण साधन से प्राप्त नहीं होते इन्हें तो आपकी कृपा से ही कोई–कोई पाता है।

कि0का0 20 (1) (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

माया विषयों में ममता आसक्ति को छोडकर परलोक का सेवन भगवान के दिव्य धाम की प्राप्ति के लिए भगवान सेवा रुपी साधन करना चाहिए जिससे जन्म मरण से उत्पन्न सारे शोक मिट जाऐं। देहधारण करने का यही फल है कि सभी कामनाओं का त्याग करके श्री रामजी का भजन (रामजी का काम रामराज्य) ही किया जाए।

कि0का0 22 (2–3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

पापी भी जिनका नाम स्मरण करके अत्यन्त अपार भवसागर से तर जाते हैं तुम उनके दूत हो अतः कायरता छोडकर श्री रामजी को हृदय में धारण करके उपाय करो।

कि0का0 28 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री गुरु जी के चरण कमलों की रज से अपने मन रुपी दर्पण को साफ करके मै श्री रघुनाथ जी का गुणगान करता हूँ।

अ0का0 (0)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे राम आपका नाम और यश ही सम्पूर्ण वस्तुओं को देने वाला है। हे राजाओं के मुकुटमणि आपके मन की अभिलाषा फल का अनुगमन करती है। अर्थात आपके इच्छा करने से पहले ही फल उत्पन्न हो जाता है।

अ0का0 3

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

यद्यपि सेवक के घर स्वामी का पधारना सभी मंगलों का मूल और अमंगलो का नाश करने वाला है तथापि स्वामी प्रेमपूर्वक दास को बुला ही लेते हैं ऐसी ही नीति है तथा स्वामी की सेवा में ही सेवक का लाभ है।

अ0का0 8 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री रामजी को जब उनके राज्यभिषेक की सूचना दी गई तो उनके मन में बडा पछतावा हुआ कि हम सभी भाई एक समान हैं तथा अभिषेक सिर्फ मेरा होना कैसी नीति है। इतना सुन्दर प्रेमपूर्ण मन था उनका।

अ0का0 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

संसार में श्री रघुनाथ जी के समान शील और स्नेह को निबाहने वाला कौन है।

अ0का0 23 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम तो ऐसे हैं जिनका स्वभाव शत्रु का भी भला ही करता है।

अ0का0 31 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

इस पृथ्वी पर उसका जन्म धन्य है जिसके चरित्र सुनकर पिता को परम आनन्द हो, जिसको माता पिता प्राणों के समान प्रिय हैं, चारों पदार्थ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष उसके करतलगत अर्थात मुठठी में रहते हैं।

अ0का0 15 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

माता की आज्ञा को पिता की आज्ञा से बड़ा माना जा सकता है मगर अगर माता–पिता दोनों की ही आज्ञा है तो उससे बड़ा कुछ भी नहीं है।

अ0का0 55 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

माता–पिता, बहन, प्यारा भाई, प्यारा परिवार, मित्रों का समुदाय, सास, ससुर, गुरु, स्वजन, बन्धु बान्धव सहायक और सुन्दर सुशील और सुख देनेवाला पुत्र, हे नाथ जहाँ तक स्नेह और नाते हैं पति के बिना स्त्री को सूर्य से भी बढ़कर तपाने वाले हैं। शरीर, धन, घर, पृथ्वी, नगर और राज्य पति के बिना सभी मेरे लिए सब शोक का समाज है, भोग रोग के सामान है, गहने भार रुप हैं, संसार यम–यातना (नरक की पीड़ा) के समान है। पति के बिना कुछ भी सुखदायी नहीं है।

अ0का0 64 (1–3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

जिस राजा के राज्य में प्यारी प्रजा दुखी रहती है। वह राजा अवश्य ही नरक का अधिकारी होगा।

अ0का0 70 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे नाथ! मै दास हूँ और आप स्वामी हैं अतः आप मुझे छोड दें तो मेरा क्या वश है।

अ0का0 64 (7)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

शास्त्र और नीति के तो वे ही श्रेष्ठ पुरुष अधिकारी हैं जो धीर हैं तथा धर्म की धुरी को धारण करने वाले हैं।

अ0का0 71 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

धर्म और नीति का उपदेश तो उसे करना चाहिए जिसे यश, ऐश्वर्य या सदगति प्यारी हो किन्तु जो प्रेम रत है उसे तो यह सब व्यर्थ ही है।

अ0का0 64 (1–3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

अपने किसी प्रिय के प्रेमवश प्रमाद (कर्तव्य कर्म में त्रुटि) करने से जगत में यश जाता रहेगा और निन्दा होगी।

अ0का0 76 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सुनो राम तुम्हारे लिए लोग (मुनिलोग) कहते हैं कि श्री राम चराचर के स्वामी है ।

अ0का0 76 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

शुभ–अशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर हृदय में विचार कर फल देता है। जो कर्म करता है वही फल पाता है। ऐसी वेद की नीति है यह सब कोई कहते हैं।

अ0का0 76 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

गुरु, माता–पिता, भाई, देवता और स्वामी इन सबकी सेवा प्राण के समान करनी चाहिए। श्री राम जी तो प्राणों के भी प्रिय हैं, हृदय के भी जीवन हैं, तथा सभी के स्वार्थरहित सखा हैं।

अ0का0 63 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सम्पूर्ण पुण्यों का सबसे बडा फल यही है कि श्री सीता राम जी के चरणों में स्वाभविक प्रेम हो।

अ0का0 74 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री दशरथ जी का महल जो अत्यन्त सुन्दर है। उसमें सुन्दर मणियों के चौबारे हैं जो पवित्र, बड़े ही विलक्षण, सुन्दर ,भोग पदार्थो से पूर्ण और फूलों की सुगन्ध से सुवासित है, जहाँ सुन्दर पलंग तथा मणियों के दीपक हैं, सब प्रकार का आराम है, ओढ़ने बिछाने के वस्त्र तकिये और गददे दूध के फेन के समान उज्जवल तथा निर्मल हैं, वही सीता–राम जी आज घास फूस की सारथी पर बिना ही वस्त्र सो रहे हैं। माता पिता, कुटुम्बी, प्रजा, मित्र, अच्छे शील स्वभाव वाले दास–दासी जिनका ख्याल रखते थे आज पृथ्वी पर सो रहे हैं इसीलिए कहते है कर्म (भाग्य) प्रधान है।

अ0का0 42 (4) – 90 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

दधीचि और राजा हरिशचन्द्र ने धर्म के लिए करोडों अनेकों कष्ट सहे थे। बुद्धिमान राजा शान्तिदेव और बलि बहुत से संकट सहकर भी धर्म को पकड़े रहे। वेद,

शास्त्र और पुराणों में कहा गया है कि सत्य के समान कोई दूसरा धर्म नहीं है। इस सत्यरुपी धर्म का त्याग करने से तीनों लोकों में अपयश की प्राप्ति करोडों मृत्यु के समान भीषण दुख देने वाली होती है।

अ0का0 93 (2–4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जब केवट ने राम जी को पार लगाया तथा उनके चरण छुये तो राम जी ने सोचा कि इसे कुछ दिया तो है ही नहीं। सीता माता ने श्री रामजी के हृदय की बात जानकर अपनी उंगली से रत्नजड़ित अंगूठी उतार कर दे दी। केवट ने कुछ भी नहीं लिया तथा कहा दोबारा वापिस जाते हुए जो भी देंगें मैं उसे प्रसाद स्वरुप रख लूंगा। जब केवट ने कुछ न लिया तो श्री राम जी उसको भक्ति का वर देकर चल दिये।

अ0का0 101–102

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सुख के समुद्र हैं श्री रामजी

अ0का0 105 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राजा का मन्त्री(सत्य), प्यारी स्त्री(श्रद्धा), चारों पदार्थ (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) से भण्डार भरा हुआ तथा पुण्यमय प्रान्त होना चाहिए तथा पाप रुपी शत्रुओं से बचने के लिए सम्पूर्ण तीर्थ (वेद सम्मत विचार), मुनि (भगवान श्री राम के चरित्र) होने चाहिए।

अ0का0 104 (2–3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जब श्री राम सीता एवं लक्ष्मण जी वन को जा रहे हैं ऐसे सुशोभित हो रहे हैं जैसे भगवान और जीव के बीच में माया।
प्रभु श्री राम जी के चरण चिन्हों के बीच बीच में पैर रखती हुई सीता जी डरती हुई मार्ग में चल रही हैं कि कहीं भगवान के चरण चिन्हों पर उनके पैर न लग जाऐं तथा श्री लक्ष्मण जी उन दोनों के चरण चिन्हों से अपने पैर बचाकर चल रहे हैं।

आज भी जिसके हृदय में स्वप्न में भी कभी लक्ष्मण, सीता, राम तीनों बटोही आ बसें तो वह भी श्री राम जी के परमधाम के उस मार्ग को पा जाता है (जाएगा) जिस मार्ग को कभी कोई बिरले मुनि ही पाते हैं।

अ0का0 122 (1) – (123) (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे राम! आपका स्वरुप वाणी से अगोचर, बुद्धि से परे, अव्यक्त, अकथनीय और अपार है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी आपके मर्म को नहीं जानते हैं तब और कौन आपको जानने वाला है।
वही आपको जान पाता है जिसे आप जना देते हैं और जानते ही वह आपका स्वरुप हो जाता है। आप भक्तों के हदय को चंदन की भांति शीतल करते हैं तथा आपकी कृपा से ही भक्त आपको जान पाते हैं।

अ0का0 126 – 126(3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे राम आपके चरित्रों को देख कर, सुन कर मूर्ख लोग तो मोह को प्राप्त हो जाते हैं और ज्ञानी जन सुखी हो

जाते हैं। आप जो कुछ कहते (करते) हैं वह सब सत्य (उचित) ही है। आपने मानव शरीर में इसीलिए जन्म लिया कि आप दिखा सकें कि 'सत्य' जैसा है वैसा मनुष्य के द्वारा किया भी जा सकता है क्योंकि जैसा स्वांग करे वैसा नाचना भी तो चाहिए।

अ0का0 126(4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सीता जी और लक्ष्मण को जिस प्रकार सुख मिले श्री रघुनाथ जी वही करते हैं, और वही कहते हैं। भगवान प्राचीन कथाएं और कहानियां कहते हैं तथा लक्ष्मण जी उनको देखकर तथा सुनकर व सीता जी अत्यन्त सुख मानते हैं।

अ0का0 140 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

चिन्ता के समय अच्छी–अच्छी (श्रेष्ठ और कल्याणकारी) बातें करने से सन्तोष मिलता है।

रा0प्र0 3 (5) (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जो लोग श्री हरि और शंकर जी के चरणों को छोड़कर भयानक भूत प्रेतों को भजते हैं। जो लोग वेदों को बेचते हैं, धर्म को दुह लेते हैं, चुगलखोर हैं, दूसरों के पापों को कह देते हैं, जो कपटी, कुटिल, कलहप्रिय, क्रोधी हैं, जो वेदों की निन्दा करते हैं, जो विश्व भर के विरोधी हैं, जो लोभी, लम्पट, लालचियों का आचरण करने वाले हैं, जो पराये धन तथा परायी स्त्री की ताक में रहते हैं जिनका सत्संग में प्रेम नहीं है, जो अभागे, परमार्थ के मार्ग से

विमुख हैं, जो ठग हैं, और भेष बनाकर जगत को छलते हैं, वे सब पाप के भागी है।

अ0का0 167 – 167 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सुनो भावी बहुत बलवान है। हानि, लाभ, जीवन–मरण और यश अपयश ये तो सब विधाता के हाथ हैं ऐसा सोच कर किसे दोष दिया जाए तथा किस पर क्रोध किया जाए।

अ0 क0 (167)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

वशिष्ठ जी ने कहा है, तात धीरज धरो और आज जिस कार्य के करने का अवसर है उसे करो।

अ0का0 169

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जो ब्राह्मण वेद नहीं जानता और जो अपना धर्म छोड़कर विषय भोगों में लीन रहता है, वह राजा जो नीति नहीं जानता जिसे प्रजा प्राणों के समान प्यारी नहीं है, ऐसा वैश्य जो धनवान होकर भी कंजूस है और जो अतिथि सत्कार व शिव भक्ति में कुशल नहीं है, जो शूद ब्राह्मणों का अपमान करने वाला है और ज्ञान का घमंड रखने वाला है, जो स्त्री पति को छलने वाली कुटिल, कलहप्रिय और स्वेच्छा चारिणी है, वह ब्रह्मचारी जो ब्रह्मव्रत छोड़ देता है तथा गुरु की आज्ञा के अनुसार नहीं चलता ऐसा गृहस्थ जो मोहवश कर्म का त्याग कर देता है, वह सयासी जो दुनिया के प्रपंच्च में फंसा है एवं ज्ञान व वैराग्य से हीन है, वह वानप्रस्थ

जिसे तपस्या छोड़कर भोग अच्छे लगते हैं, जो चुगलखोर है, बिना कारण क्रोध करता है, माता–पिता गुरु एवं भाई बन्धुओं के साथ विरोध रखता है, जो दूसरों का अनिष्ट करता है, जो निर्दयी है तथा अपने ही शरीर का पोषण करता है तथा जो छल छोड़कर हरि का भक्त नहीं होता है ऐसा मनुष्य सोचनीय तथा सोचने योग्य है।

अ0का0 161 (2) – 162 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जो उचित एवं अनुचित का विचार छोड़कर पिता के वचनों का पालन करते हैं, वे यहां सुख और सुयश के पात्र होकर अन्त में स्वर्ग में निवास करते है।

अ0का0 128

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

साधु पुरुष दुखी मनुष्य के दोष और गुणों को नहीं गिनते ।

अ0का0 176(4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

वैराग्य के बिना ब्रह्मविचार व्यर्थ है।

अ0का0 166(2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

भरत जी कहते हैं यद्यपि मैं बुरा हूँ और अपराधी हूँ और मेरे ही कारण सारा उपद्रव हुआ है तथापि श्री राम जी मुझे शरण में सम्मुख आया हुआ देखकर मेरे सब अपराध क्षमा कर देंगे, श्री रघुनाथ जी तो शील, संकोच,

अत्यन्त सरल स्वभाव, कृपा और स्नेह के घर हैं। श्री राम जी ने कभी शत्रु का भी अनिष्ट नहीं किया है। मैं यद्यपि टेढा हूँ पर हूँ तो इनका बच्चा एवं सेवक ही ।

अ0 का0 182 (4, 3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

सारी सम्पत्ति श्री रघुनाथ जी की है। यदि उसकी रक्षा (व्यवस्था) किये बिना उसे ऐसे ही छोड़कर चल दूं तो परिणाम में मेरी भलाई नहीं है। क्योंकि स्वामी का द्रोह सब पापों में शिरोमणि है। सेवक वही है जो स्वामी का हित करे, चाहे करोड़ों दोष कोई क्यों न दे।

अ0का0 185 (1) –(2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

जल्दी में (बिना विचारे) कोई काम करके मूर्ख लोग पछताते हैं। खास कर यह पहचानने में कि दूसरा मित्र है या शत्रु, बिना जाने मित्र को शत्रु समझकर युद्ध कर लेने से बड़ी हानि होती है।

अ0का0 191(4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम का प्यारा जानकर, क्योंकि राम का प्यारा तो वही होता है जो राममय होता है जिसकी राम जैसी सोच राम जैसा व्यवहार, राम जैसी कार्यपद्वति होती है, नीच मनुष्य को भी जगत सम्मान देता है।

अ0का0 192 (4) – 193 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

जगत जानता है कि उलटा नाम (मरा–मरा) जपते–जपते बाल्मीकि जी ब्रहम के समान हो गये थे।

मूर्ख, पामर, चाण्डाल, शबर, खस, यवन और किरात सभी राम– नाम कह कहकर ही परम पवित्र और त्रिभुवन में विख्यात हो जाते हैं।

अ0का0 194

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है युग–युगान्तर से यही रीति चली आ रही है। श्री रघुनाथ जी ने किसको बड़ाई नहीं दी । राम नाम की महिमा सुन–सुनकर सब सुख पाते हैं।

अ0का0 194 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मैं कपटी, कायर, कुबुद्धि और कुजाति हूँ और लोक–वेद दोनों से सब प्रकार से बाहर हूँ। पर जब से श्री रामचन्द्र जी ने मुझे अपनाया है, तभी से मैं विश्व का भूषण हो गया हूँ।

अ0का0 195 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

प्रभु श्री रघुनाथ जी जो कि इतने बड़े हैं कि जो कोई भी बड़ा होता है। वह श्री रामचन्द्र जी की (दी हुई) बड़ाई से ही बड़ा होता है।

अ0का0 198 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे भरत श्री राम जी का तुम पर प्रेम है, यह श्री रघुनाथ जी की बहुत बड़ाई नहीं है क्योंकि श्री रघुनाथ जी तो स्वयं ही स्वभावतः शरणागत के कुटुम्बभर को पालने वाले हैं।

अ0का0 297

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे देवराज। माया के स्वामी श्री रामचन्द्र जी के सेवक के साथ कोई माया करता है तो वह उलटकर अपने ही ऊपर आ पड़ती है। श्री रघुनाथ जी का स्वभाव है कि वे अपने प्रति किये हुए अपराध से कभी रुष्ट नहीं होते पर जो कोई उनके भक्त का अपराध करता है वह उनकी क्रोधाग्नि में जल जाता है।

अ0का0 297 (1) –(3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम जी को अपना सेवक परमप्रिय है वे अपने सेवक की सेवा से सुख मानते हैं तथा सेवक के साथ वैर करने से बड़ा भारी वैर मानते हैं श्री राम सम है वे भक्त को प्रेम से गले लगाते हैं तथा अभक्त को मारकर तार देते हैं तथा वे अपने भक्तों की रुचि को सदा रखते आए हैं। श्री राम के भक्त सदा दूसरों के हित में लगे रहते है।

अ0का0 218 (1) से 219

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

भरत जी जब भी राम कहकर लम्बी सांस लेते है तभी मानों चारों और प्रेम उमड़ आता है।

अ0का0 219 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

जिन्होंने साधुओं का संग (सेवन) सत्संग नहीं किया है वे ही राजा राजमद रुपी मदिरा आचमन करते ही सीधे मतवाले हो जाते हैं। हे लक्ष्मण सुनो भरत सरीखा उत्तम पुरुष ब्रह्मा जी की सृष्टि में न तो कहीं सुना गया

है न देखा गया है। अयोध्या के राज्य की तो बात ही क्या ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का पद पाकर भी भरत को राजमद नहीं हो सकता है।

अ0का0 230 (4) – 231

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री रामचन्द्र जी के निवास से वन की सम्पत्ति ऐसी सुशोभित है मानों अच्छे राजा को पाकर प्रजा सुखी हो। सुहावना वन ही पवित्र देश है, विवेक उसका राजा है और वैराग्य मन्त्री है यम (अहिंसा, सत्य, असत्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) तथा नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राविधान) योद्धा हैं, पर्वत राजधानी है, शान्ति एवं सुबुद्धि दो रानियां हैं वह श्रेष्ठ राजा (विवेक) राज्य के सब अंगों से पूर्ण हैं तथा श्री रामचन्द्र जी के चरणों के आश्रित रहने से उसके चित में चाव (आनन्द या उत्साह) है। (स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग तथा सेना) ये राज्य के सात अंग होते हैं। मोह रुपी राजा को सेना सहित जीतकर विवकेरुपी राजा निष्कंटक राज्य करता है।

अ0का0 234 (3) से 235

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री सीताराम जी मुनियों के वृन्द समेत बैठकर नित्य शास्त्र, वेद और पुराणों के सब कथा इतिहास सुनते हैं।

अ0का0 217

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जब शुद्ध हुए 2 दिन बीत गये तब श्री राम चन्द्र जी प्रेम के साथ गुरु जी से बोले हे नाथ सब लोग यहां अत्यन्त

दुखी हो रहे हैं कन्द, मूल, फल और जल का ही आहार करते हैं सबकी दशा देखकर मुझे एक-एक पल युग के समान बीत रहा है। अतः सब के साथ आप अयोध्यापुरी पधारिये (लौटिये) आप सब यहां हैं अयोध्या सूनी है। मैंने बहुत कह डाला यह सब बड़ी ढिठाई की है। हे नाथ बाकी जैसा उचित हो आप वैसा करें।

अ0का0 248

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम जी धर्म–धुरन्धर, स्वतन्त्र, भगवान, सत्यप्रतिज्ञ, वेदों की मर्यादा के रक्षक हैं। उनका जन्म जगत के कल्याण के लिए हुआ। वे गुरु माता तथा पिता के वचनों के अनुसार चलते हैं। दुष्टों के दल का नाश करने वाले तथा देवताओं के हितकारी हैं। नीति, प्रेम, परमार्थ और स्वार्थ को श्रीराम जी के समान यथार्थ तत्व से कोई नहीं जानता। ब्रह्मा विष्णु, महादेव, चन्द्र, सूर्य, दिक्पाल, माया, जीव, सभी कर्म, काल, शेष जी पृथ्वी एवं पाताल के अन्य सभी राजा आदि जहां तक प्रभुता है और योग की सिद्धियां जो वेद और शास्त्रों में गायी गई हैं हृदय में अच्छी तरह विचार करके देखो तो स्पष्ट दिखायी देगा श्री राम जी की आज्ञा इन सभी को सिर पर है। अर्थात श्री राम जी एक मात्र महान महेश्वर हैं। अतएव श्री राम जी की आज्ञा एवं रुख रखने में ही सबका हित है।

अ0का0 253 (1) –254

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

पहले भरत की विनती सुन लीजिए फिर उस पर विचार

कीजिए। तब साधुमत, लोकमत, राजनीति तथा वेदों का निचोड़ निकालकर वैसा ही उस के अनुसार कीजिए।

अ0का0 258

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

छोटा भाई जानकर उसके मुंह पर उसकी बड़ाई करने में मुझे संकोच होता है। फिर भी मैं तो यही कहूँगा कि हां अवश्य ही भरत जो कुछ कहे वही करने में हम सबकी भलाई है। ऐसा कहकर श्री रामचन्द्र जी चुप हो गये।

अ0का0 258 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मैं अपने स्वामी का स्वभाव जानता हूँ वे तो अपने अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं करते तथा मुझ पर तो उनका विशेष स्नेह है। मैंने खेल में भी कभी उनकी अप्रसन्नता नहीं देखी बचपन से ही मैंने उनका साथ नहीं छोड़ा और उन्होंने भी कभी मेरे मन को नहीं तोड़ा। मैंने प्रभु की कृपा की रीति को भली भांति हृदय से अनुभव किया है। मेरे हारने पर भी प्रभु मुझे जिता ही देते थे।

अ0का0 259 (3) –(4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

अपनी समझ से कौन साधु और पवित्र हुआ है। जिसको दूसरे लोग साधु और पवित्र मानें वही साधु है।

अ0का0 260 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे भरत तुम्हारा नाम स्मरण करते ही सब पाप, प्रपंच्च (अज्ञान) और समस्त अमंगलों के समूह मिट जाऐंगे तथा इस लोक में सुन्दर यश तथा परलोक में सुख प्राप्त होगा।

अ0का0 263

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

वैर और प्रेम छिपाये नहीं छिपते हैं।

अ0का0 263 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

पशु और पक्षी भी मुनियों के पास बेधड़क चले जाते है तथा बधिकों को देखकर हिरन भी तुरन्त भाग जाता है।

अ0का0 263 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम जी तो भक्त के वश में हैं। पहले देवताओं ने बहुत दुख सहे तब भक्त प्रहलाद ने ही नृसिंह भगवान को प्रकट किया।

अ0का0 264 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम जी का आश्रम शान्तरस रुपी पवित्र जल से परिपूर्ण समुद्र है।

अ0का0 265

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सीता जी कुछ कहती नहीं परन्तु मन में सकुचा रही हैं कि रात में सासुओं की सेवा छोड़कर यहां रहना अच्छा नहीं है। रानी सुनयना जी ने जानकी जी का रुख देखकर राजा जनक जी को जना दिया तथा दोनों

अपने हृदय में सीता जी की सराहना करने लगे।

अ0का0 276 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

भरत जी के चरित्र कीर्ति, करनी, धर्म, शील, गुण, और निर्मल ऐश्वर्य समझने और सुनने में सुख देने वाले हैं और पवित्रता में गंगा जी का तथा स्वाद में मधुरता अमृत का भी तिरस्कार करने वाले। भरत जी के समान तो बस भरत ही है।

अ0का0 288

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री रामचन्द्र जी समता की सीमा है।

अ0का0 288 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जहाँ श्री राम जी के चरण कमलों में प्रेम नहीं है वह सुख, कर्म और धर्म जल जाय। जिसमें श्री राम प्रेम की प्रधानता नहीं है। वह योग कुयोग है और वह ज्ञान, अज्ञान है। तुम्हारे बिना ही सब दुखी है और जो सुखी है वे तुम्हीं से सुखी हैं। जिसके जी में आप हों वही जी बस जी है। उस जी का जीवन ही सार्थक है सफल हैं।

अ0का0 290 (2)– (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

वेद, शास्त्र और पुराणों में प्रसिद्ध है और जगत जानता है कि सेवा धर्म बड़ा कठिन है। स्वामी धर्म में अर्थात स्वामी के प्रतिकर्तव्य पालन में और स्वार्थ में विरोध है (दोनों एक साथ नही निभ पाते हैं)।

अ0का0 292 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

वैर अंधा होता है। और प्रेम को ज्ञान नहीं रहता (स्वार्थवश कहा जाए या प्रेमवश दोनों में ही भूल होने का भय है)।

अ0का0 292 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

मुझे पराधीन जानकर (मुझसे न पूछकर) श्री रामचन्द्र जी के रुख (रुचि) को पहचान कर धर्म और सत्य ब्रत को रखते हुए, जो सबके सम्मत और सबके हितकारी हो सबका प्रेम पहचानकर वही कीजिए, सब मंगल होगा।

अ0का0 293

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

भरत जी के हृदय में श्री सीता राम जी का निवास है। जहां सूर्य का प्रकाश हो, वहां कहीं अंधेरा रह सकता है।

अ0का0 293 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे प्रभु। आप पिता, माता, सहृद, मित्र, गुरु, स्वामी, पूज्य, परम हितैषी, और अर्न्तयामी है। सरल हृदय, श्रेष्ठ मालिक, शील के भण्डार, शरणागत की रक्षा करने वाले, सर्वज्ञ, सुजान, समर्थ, शरणागत का हित करने वाले, गुणों का आदर करने वाले अवगुणों व पापों को हरने वाले हैं।

अ0का0 297 (1), (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

आपने अपनी कृपा से और भलाई से मेरा भला किया है जिससे मेरा दोष भी गुण हो गया है तथा चारों और मेरा सुन्दर यश छा गया है।

अ0का0 298

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आपकी रीति और सुन्दर स्वभाव की बड़ाई जगत में प्रसिद्ध है, और वेदों ने गायी है। जो क्रूर, कुटिल, दुष्ट, कुबुद्धि, कलंकी, नीच, शील रहित, नास्तिक, और निडर है उन्हें भी अपनी शरण में सम्मुख आया सुनकर एक बार प्रणाम करने पर ही आप उन्हें अपना लेते हैं।उनके दोषों को देखकर भी आप कभी अपने हृदय में नहीं लाते हैं और उनके गुणों को सुनकर साधुओं के समाज में उनका बखान किया करते हैं। ऐसा सेवक पर कृपा करने वाला स्वामी कौन है।

जो आप ही सेवक का सारा सामान सजा दे अर्थात उसकी आवश्यकताऐं पूरी कर दे और स्वप्न में भी अपनी करनी न समझकर वरन उत्तम सेवक को संकोच होगा, इसका सोच अपने हृदय में रक्खे। ऐसे हैं श्री राम।

अ0का0 298 (1) (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

भरत जी के सदभाव को कहते सुनते कौन मनुष्य श्री सीताराम जी के चरणों में अनुरक्त न हो जाएगा।

अ0का0 303 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम जी वन भ्रमण हेतु पैदल ही चल दिये। कोमल चरण हैं और बिना जूते के चल रहे हैं पृथ्वी यह देखकर मन ही मन सकुचाकर कोमल हो गयी। कुश, कांटे कंकडी, दरारें आदि कडवी, कठोर और बुरी वस्तुओं को

छिपाकर पृथ्वी ने सुंन्दर और कोमल मार्ग बना दिया।

अ0का0 310 (2,1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जब एक साधारण मनुष्य को भी आलस्य से जंभाई लेते समय राम कह देने से ही सब सिद्धियां सुलभ हो जाती हैं तब भरत जी की तो बात ही क्या है।

अ0का0 311

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री रामचन्द्र जी के समान संकोची स्वामी कहीं नहीं है।

अ0का0 312 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

गुरु, पिता, माता, और स्वामी की शिक्षा (आज्ञा) का पालन करने से कुमार्ग पर भी चलने पर पैर गडढें में नहीं पड़ता है अर्थात पतन नहीं होता है।

अ0का0 314 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

देश, खजाना, कुटुम्ब, परिवार आदि सबकी जिम्मेदारी तो श्री गुरु जी की चरण रज पर है। तुम तो मुनि वशिष्ट जी, माताओं और मन्त्रियों की शिक्षा मानकर तदनुसार पृथ्वी, प्रजा और राजधानी का पालन (रक्षा) करते रहना। श्री राम जी कहते है कि मुखिया मुख के समान होता है जो खाने पीने को तो अकेला है परन्तु विवेक पूर्वक सब अंगों का पालन पोषण करता है।

अ0का0 313 (4) 314

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जब कोई शरीर ऐसा हो जाता है कि मानों वैराग्य,

भक्ति और ज्ञान शरीर धारण कर रहा हो तो वह शरीर राम जैसा सुन्दर हो जाता है, अनिर्वचनीय हो जाता है।

अ0का0 321

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सेवक सबसे प्रिय होना चाहिए क्योंकि उसका कोई दूसरा आश्रय नहीं है। सेवक पवित्र सुन्दर तथा सुशील बुद्धि वाला होना चाहिए।

(उ0का0 6 (4–6)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जो आपका भक्त है वह आपको प्राणों के समान प्रिय होना चाहिए अर्थात जो मन से वचन से व कर्म से भक्त होता है। श्री राम जी की कृपा बिना श्री राम जी की प्रभुता नहीं जानी जाती, प्रभुता जाने बिना विश्वास नहीं जमता विश्वास के बिना प्रीति नहीं होती और प्रीति बिना भक्ति दृढ़ नहीं होती ।

उ0का0(89)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

कलियुग में ब्राह्मण वेदों को बेचते हैं तथा राजा प्रजा को खा डालने वाले होते हैं

कलियुग में जो सारे भरोसे त्यागकर श्री राम जी को भजता है तथा उनके निर्मल गुणों को गाता है बस वही भवसागर से तर जाता है।

कलियुग में किसी भी प्रकार से दान किये जाने पर कल्याण होता है।

नीति है कि दुष्ट से न तो कलह ही अच्छी है और न प्रेम ही।

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

रामराज्य में दंड केवल सन्तों के द्वारा दिया जाता था, कोई खुद नहीं देता था। कलयुग में सभी परेशानियों की जड़ खुद दण्ड देना है, दण्ड देना हमारा अधिकार नहीं होना चाहिए तथा सभी जगह जहां भी दण्ड देना आवश्यक है सिर्फ सन्तों के द्वारा ही दिलाना चाहिए। यह इन्तकाम की भावना को अर्थात दण्ड की जो प्रतिकिया होती है को खतम करेगा क्योंकि सन्तों द्वारा दिया गया दण्ड सभी को स्वीकार्य होगा, तथा उसकी कोई भी विवेचना नहीं करता कि दण्ड सही दिया गया या नहीं वह सभी के लिए प्रसाद होता है।
राम जी की भक्ति ऐसी होनी चाहिए भाव ऐसा कि मैं सेवक हूं और वे मेरे (सेव्य) स्वामी।

जब भक्ति होती है तो माया स्वतः ही नहीं सताती भक्ति ही उपाय है जो ज्ञान के किवाड़ खोल देती है। यह भक्ति मनुष्य तभी पाता है जब श्री राम जी की कृपा होती है। श्री राम जी की भक्ति ऐसे ही है जैसे पारसमणि अर्थात यह स्वभाव को सोना बना देती है।

वह घड़ी धन्य है जब सत्संग हो वह धन धन्य है जो दान दिया जाता है, फिर जो भोगा जाता है अन्यथा नाश हो जाता है। वह कुल धन्य है जो संसार के लिए पूज्य है और परम पवित्र है जिसमें अनन्य रामभक्त पुरुष उत्पन्न हो।

श्री राम की कथा के वे ही अधिकारी हैं जिन्हे सत्संगति प्यारी है, जिनकी गुरु चरणों में प्रीति हो जो नीति परायण हो और जो ब्राह्मणों के सेवक हों।

सारे रामचरित्र की तो बात ही क्या जो लोग 5–7 चौपाईयों को भी समझकर उनका अर्थ ह्दय में धारण कर लेते है उनके भी अविद्याजनित सारे क्लेश दूर हो जाते हैं।

हर राजा को अपना राज्य ऐसा बनाना होता है जैसे रामराज्य। और वह बनेगा अपने सेवकों से अपनी प्रजा से जब प्यार किया जाएगा। और उनसे प्यार कब होगा जब वे राजा को प्यार करेंगे और वे राजा को कब प्यार करेंगे जब राजा से ज्यादा कोई और उनका हितैषी होगा ही नहीं। राजा उनका हितैषी कैसे हो पाएगा जब वह सबके परिश्रम से होने वाला फायदा सबको सबके हिस्से अनुसार वितरित करेगा। यह वितरण उचित है कैसे पता चलेगा जब सब ही उसे उचित कहें। अर्थात वितरण नीति हिस्सेदार ही बनाऐं। हिस्सेदार फायदा वितरण नीति तब ही बना पाऐंगे जबकि ऐकाउंट एक खुली किताब होगा अर्थात कार्यकर्ताओं, जो फल में हक रखते है, से कुछ भी छिपा नहीं होगा।
एक बार ऐसे करके तो देखिए कैसा सुख होगा चारों ओर सिर्फ भला ही भला होगा क्योंकि बुरा सोचने वाला तो कोई होगा ही नहीं। और कोई बुरा होगा भी तो हम तो उसको क्षमा ही कर सकते हैं दण्ड देने का अधिकार

तो हमें है ही नहीं दण्ड तो सिर्फ सन्तों के दारा ही दिया जाता है तथा सन्त तो वैसे ही क्षमाशील प्रवृति के होते हैं।

अर्थात क्रोध (एक महत्वपूर्ण अभिशाप) पर काफी सीमा तक विजय पा ली गयी। इस रास्ते को दृढ़ता के साथ अपनाऐं तो सही में क्या सुख होगा, क्या शान्ति होगी मन के द्वन्द्व ही मिट जाऐंगे।

हे श्री राम जी हम पर बस कृपा करें। कि हम भी आपकी तरह शान्त /गम्भीर/मर्यादित/समृद्ध व सुखी हो सकें।

कहते हैं कि श्री राम की कृपा के बिना श्री राम का संग नहीं होता पर जब हम आपके पदचिन्हों पर चलेंगे तब आपका संग होगा ही।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम राम तो सब रटै पर राम बनै न कोई।
जबकि गर वो राम बने तो उन सा सुखी न कोई।।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम से सीखो वे अपनी पत्नी को कैसे प्यार करते हैं अपने गुरुओं से कैसे प्यार करते हैं, अपने दोस्तों से कैसे प्यार करते हैं अपने सेवकों से कैसे प्यार करते हैं कर्मचारियों से कैसे प्यार करते हैं अपनी प्रजा से कैसे प्यार करते हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

तथा कितना सीमित या असीमित प्यार करते है। बस यही है सब सुखों की खान कि लोग उनके दीवाने हो जाते है। कहो सब उनसे कि वे हमे अपना प्रियजन बना ले क्योंकि जो उनका प्रियजन हो जाता है उसके तो सुख की सीमा ही नही है।

क्योंकि उनका प्रियजन तो वही है जो उनके दिखाये रास्ते पर चलता है। उनका रास्ता जो बहुत ही सहज सुगम और सीधा सच्चा है छल फरेब की अर्थात अपने दिमागी फेर उधेड बुनो को तकलीफ देने की जरुरत ही नही है। सीधा सीधा है कि इसका भला कैसे किया जा सकता है, इस समस्या को हल कैसे किया जा सकता है इस काम को कैसे किया जा सकता और हर काम का तरीका है हर समस्या का समाधान है आप क्या कर सकते है आपको तो कार्य करना है और यह तो वैसे ही होगा जैसे हो सकता है सब राम भला करेगे उनमें प्रीति करे।

श्री रामचरितमानस का रामराज्य मर्यादाओं से भरा हुआ है आप श्री राम जी की मर्यादा को देखें कि श्री हनुमान जी जो कि श्री राम जी के अनन्य भक्त है ऐंसे भक्त कि भगवान की तरह पुजने लगे है भगवान राम उनमें व अपने में कोई फर्क नही मानते है मगर जब वे उनके सेवक है तो सिर्फ सेवक है श्री राम जी ने एक स्वामी व एक सेवक की दूरी को हमेशा बरकरार रखा है। जो कि सिखाता है पदों की मर्यादाओं को निभाना।

इस ही प्रकार से आपको अर्थात एक स्वामी को अपने सेवक को सभी प्रकार के सुख देने की निरन्तर चेष्टा करनी चाहिए, मगर उसकी आकांक्षाए नही बढानी चाहिए, अन्यथा सेवक सच्चा सेवक मन से नही रह पाएगा, उसको वही प्रदान करना चाहिए कि जिसकी अगर वो आकांक्षा करने लगे तो आप इसे पूरी कर सको तथा निभा सको।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मेरे मन में विचार है भगवत्चर्चा ही क्यों, क्यों हम भगवान का ही नाम लेने के लिए कहते हैं यह बात है जन्म ग्रहों की तथा प्रालब्ध की है कि कुछ के भाग्य में है वे भगवान की भक्ति करेंगे कुछ के भाग्य में है कुछ और करना।

अर्थात हैं तो सभी कार्य भगवान के अतः सभी कार्य करने वाले ऊँचे हैं जो भगवान के द्वारा दिये गये कार्यो को भगवान के बताये गये रास्ते के अनुसार (**i.e.** शास्त्रानुसार, सदभावनानुसार) करते हैं ऐसा नहीं हो सकता कि जो भगवत्चर्चा करें वह ऊँचा तथा बाकी सब नीचे।

अर्थात सवाल बस इतना होना चाहिए कि मनुष्य भगवान के द्वारा दिया गया कार्य सदभावना के साथ कर रहा है या नहीं बस केवल यही है मापदण्ड दूसरा कोई और नहीं।

यदि पुरुष सभी दूसरों को अपने – अपने रास्ते की तरफ खीचनें लगेंगे तो (जैसे भगवत्प्रेमी दूसरों को खींचता है कि भगवान भजन ही सब कुछ है बाकी सब मिथ्या) तो समाज ही नष्ट हो जाएगा, समाज के सब कार्य कैसे होंगे।

भगवत्प्रेमियों का फर्ज सिर्फ यह बनता है कि वे हर व्यक्ति को उसका काम उसे भगवान के अन्दाज से करना सिखाऐं सिर्फ यही है सच्चा भगवत्प्रेम ऐसा मेरा सोचना तथा मानना है ।

सवाल उठता है भगवान के अनुसार क्या है यह एक कठिन पेचीदा तथा विशाल सवाल है मगर सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण।

भगवान कौन हैं एक आत्मा, महाआत्मा, परमात्मा जो सर्वोत्तम है सर्वोत्तम कौन है जो सर्वोत्तम करता है और सर्वोत्तम वह है जिससे सिर्फ भला सभी का भला किसी का बुरा नहीं और भला भी कितना अत्याधिक अर्थात एक हीरो के समान। भगवान जिसके बड़प्पन का स्तर बहुत ही ऊंचा है कह सकते हैं सबसे ऊंचा अर्थात उन्हें किसी पर गुस्सा आता ही नहीं, नहीं मैं गुस्सा नहीं कहुंगा, मैं कहुंगा उन्हें चिड़चिड़ाहट किसी से कभी भी होती ही नहीं वह हर चीज का सिर्फ एक सुलझा हुआ समाधान देते हैं।
निचोड़ है चिड़चिड़ाहट अर्थात अगर आप अपनी

चिड़चिड़ाहट पर विजय प्राप्त कर लेते हैं तो शायद भगवान के बहुत करीब हैं। शायद! क्योंकि चिड़चिड़ाहट एक तत्व है सम्पूर्ण नहीं और भी कुछ हैं मगर यह एक महत्वपूर्ण है।

यही मनुष्य की कमजोरी है जहां चिड़चिड़ाहट हुई आदमी से गलती होने के अवसर बढ़ गये, और अगर आपसे गलती हो गयी तो फिर उसकी प्रतिक्रियाओं का जो जाल बिछता है भयंकर तक भी कभी कभी हो जाता है।

जैसे सर्वसाधारण भाषा में अक्सर यह बात आती है कि मैनें बस एक बार एक झूठ बोल दिया और बस उसी की वजह से मुझे इतने झूठ बोलने पड़े कि मैं ही झूठा हो गया और झूठ के चक्रव्यूह में फंस गया हूँ उलझता ही चला जा रहा हूँ। बस यही है उस चिड़चिड़ाहट का परिणाम।

मैनें यहां चिड़चिड़ाहट को सम्पूर्ण नहीं कहा क्योंकि अगर आप बहुत ज्ञानी हैं आप हर कार्य को धैर्य से सुनते और करते हैं। अगर आपका उद्देश्य सात्विक नहीं है या कहो गैर शास्त्रिक है जैसे यह सब आप अपना सुख हासिल करने के लिए करते हैं चाहें किसी दूसरे को दुखी ही क्यों न करना पडें। हां यहीं पर अगर आप यह सब दुसरों को सुखी करके अपना सुख हासिल करने के लिए करते है तो बिलकुल शास्त्रिक

है। तो निश्चित ही आप, शायद नहीं निश्चित भगवान के अत्यन्त करीब है।
अर्थात आपने देखा चिड़चिड़ाहट न होना, कार्य को धैर्य पूर्वक देखना, सुनना व करना एक सिर्फ कार्य कुशलता है अगर कार्य कुशलता गैर शास्त्रिक है तो पाप है दानवता है और अगर शास्त्रिक है तो केवल भगवत्प्रेम ।

बस करना यही है कि कार्य कुशलता जो बहुतों में है तथा काफी जगह दानवता है, को देवत्व में बदलना है।

क्योंकि जो अपना सुख दूसरों को सुख पहुंचाकर पाया जाता है उसमें स्थिरता है अगर यही सुख दूसरों को दुख पहुंचाकर पाया जाता है तो इसमें अस्थिर सुख ही है इसमें पूरी उम्मीद है कि इसका अन्तिम नतीजा दुख होगा।

और यह सब आसान है कठिन नहीं है बस जरुरत है इस भाव का होना । हम कार्यकुशल तो हैं ही वह तो होना भी चाहिए वह तो आवश्यकता है हर किसी को होना ही चाहिए। बस उस कार्यकुशलता को सिर्फ शास्त्रानुसार करना है भगवान ने कोई चीज/समस्या ऐसी नहीं दी जिसका शास्त्रानुसार हल न दियां हो बस सिर्फ तसल्ली करें और सोचें कि कार्य तो सिर्फ भगवानी तरीके से ही करना है कोई दूसरा तरीका तो हमें आता ही नहीं आप देखेगें आपका कार्य भगवानी तरीके से ही होगा और फिर आप सुख भोगेंगे कैसा

सुख बस भगवान ही जानते हैं वह सुख तो क्योंकि वह ही अपने सब काम भगवानी तरीके से ही करते है।

बस हमे चिड़चिड़ाहट से काम का सत्यानाश नहीं कर देना है।

भगवानी तरीका सोच के ही आनन्द आ जाएगा। आप सक्षम न हों तो आप ऐसे लोगों को अपना सहयोगी बनाऐ जो भगवानी नजरिये के हैं। आप भगवानी तरीके, भगवानी सोच सीखेंगे और भगवानी शान्ति का सुख भोगेंगे।

श्री राम ने भोगा है भगवानी सुख और चाहे भोगा हो या न भोगा हो हमें क्या लेना और क्यों लेना जब अच्छा रास्ता फूलों से भरा, सच्ची प्रशंसाओं से भरा है तो हम किसी और रास्ते पर जिसमें कांटे भी हो सकते हैं हो सकता कहूंगा इसमें निश्चित कुछ नहीं है क्यों चलें जबकि सदमार्ग पर चलना भी आसान है बस चिड़चिड़ाहट पर विजय प्राप्त करके धैर्य तथा समझदारी के साथ दूसरों को सिर्फ सुख ही देकर अपने लिए सुखों को हासिल करना है।

यही भगवानी कर्म है भगवत्प्रेम है तथा भगवानपन है

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

नजरिया! हमें कुछ नहीं करना होता है बदलना होता है सिर्फ नजरिया जो बदलता है तब जब हमें अपने आदर्श

की नजर से देखना आ जाता है तथा जब हम अपने आदर्श को खूब पढते हैं अपने आदर्श का खूब मनन करते हैं उसको जपते हैं तो हम सीखते हैं चीजों को उसकी नजर से देखना। आज के कलयुग में जरुरत है 3 समावेशित (मिश्रित नजर की)

– श्री राम की नजर
– श्री कृष्ण की नजर
– श्री शंकर की नजर

श्री राम की नजर :– एक नजर जो पूर्णतः सक्षम है सम्पूर्ण सामर्थ्यवान है निर्भीक है लड़ने मरने तक के लिए भी तैयार मगर सिर्फ सद उद्देश्य के लिए जो दुष्टों का नाश करते है उनसे निर्भीकता पूर्वक लड़कर।

श्री कृष्ण की नजर :– एक नजर जो लड़ाई में कम विश्वास करती है हां लड़ाई हो जाती है तो डरती भी नहीं है लड़ जाती है मगर लड़ाई को टालती है जब तक कि कोई मजबूरी न हो। यह नजर खेलती है सियासत, छलरुपी सियासत केवल सद उददेश्य लिए।

श्री शंकर की नजर :– एक नजर जो बस देखती है करने सब कुछ कुदरत को देती है जो होगा कुदरत करेगी खुद शान्त होकर बस देखते रहना है परेशानियों को एवं कुदरत को आपस में लड़ते रहने देना है तथा सभी परेशानियों को अपने ऊपर लेते रहना है उन्हें भी

जिन पर हमारा बस नहीं चल सकता क्योंकि हम सबके पिता हैं परेशानी हम अपने ऊपर नहीं लेंगे तो कौन लेगा जब परेशानी अपने ऊपर ले ली जाती है तो सभी को शंकर के साथ होना ही पडता है और शंकर जी की तरफ से कुदरत की कृपा से सभी लड़ते हैं सभी दुष्ट, राक्षस और सभी देवता। उन्हें तो बचाया ही जाना है क्योंकि वे तो भोले हैं सभी की परेशानी में काम आते हैं उन्हें नहीं पता कैसे लड़ा जाना है बस वे तो लड़ते रहते हैं जूझते रहते हैं। एक समाधिस्थ, ध्यानस्थ पुरुष जो अपने को समस्त रुप से विरक्त रखते हुए पूरा गृहस्थ संसार निभा रहा है।

तीनों नजरों में एक ही बात समान है सद्पन ये लोग जो भी करते है सद्भावना से करते हैं इसीलिए भगवान हैं जो ये तीनों करते है और लोग भी करते है लड़ना भी छलना भी अपना उल्लू सीधा करना भी मगर उसका उद्देश्य सद् उददेश्य न होने से उन्हें यह भगवान की जगह आलोचना का पात्र बना देती हैं वे कहलाने लगते है दुष्ट, राक्षस, पापी। बस यही करना है हमें अपने कार्य अपनी सामर्थ्यो का, साध्यों का ध्यान रखते हुए जब आप जैसी जरुरत समझते हैं एक सद उददेश्य के साथ करना है।

अब सवाल उठता है सद् उद्देश्य क्या है किसे कहते है सद् उददेश्य। यह है बस एक ऐसा उददेश्य जिसमें सिर्फ भला ही चाहा जाता हे अपना भी एवं औरों का भी,

पर, या साप्ताहिक किसी खेल को आयोजन करके या एकविशेष भोजन पर सब लोग साथ बैठें ताकि सभी के मनों का मेल हो क्योंकि 'सब मन मिले का मेला' है।

6. हम श्री राम के उस रूप का जो कि वह अपने शरणागतों पर लुटाते थे, अपने सेवको पर लुटाते थे, अपने आश्रितो पर लुटाते थे का अनुसरण करें, बस हम श्री राम के काम में हाथ बटायें (क्योंकि उनका काम तो रामराज्य बनाना ही था) क्योंकि सभी जीव भगवान पर आश्रित है, तथा भगवान का काम है अपने आश्रितों, शरणांगतो, भक्तों का ध्यान रखना उन्हें दुःखों से बचाना, हम भगवान के इस सुन्दर काम में उनका हाथ बटायें और उन्हें (भगवान को) अपना आभारी बनायें।
7. अहिंसा का रास्ता अपनाऐं केवल शारीरिक अहिंसा ही नहीं बल्कि मानसिक अहिंसा भी। अगर आपने मानसिक अहिंसा करना सीख लिया तो यह दगा आपको सबका प्यार आपके राज्य (घर) में प्यारपूर्ण वातावरण बन जाएगा। मानसिक अहिंसा मतलब किसी के मन को न कचले बल्कि हो सके जो कोशिश करें वह करने की, जिससे कि आपके राज्य के सदस्यों तथा अन्यों के मन खुश हों सके।
8. ध्यान रखे अगर आप सबों को खुशी दे रहे हैं तो अपने (स्वयं) को भी खुशी ही दें, अरे भाई आप का अपने पर हक औरों के हक से ज्यादा ही होना चाहिए फिर कम क्यों, Balance करें, हो जाता हैं।
9. आप मिशन के कार्य में यथा सम्भव सभी प्रकार के जो भी सम्भव है, सहयोग प्रदान करें मगर ऐसा सहयोग जिससे आप गर्व महसूस करें और आपको खुशी मिले ताकि हमारा मिशन अपने उद्देश्य में कामयाब हो सके। कहते हैं तु भगवान के राक्ते पर चल कर तो देख तेरे लिए सारे रास्ते न खोल दूँ तो कहना, तु मेरे लिए आंसू बहा के ता देख मैं तेरी सारी दुनिया अपनी न बना दूं तो कहना, तू मेरे लुटा के तो देख, मैं तेरे पर खजानों का ढ़ेर न लगा दूं तो कहना, तु मुझे अपना बना के तो देख मै हर एक को तेरा अपना न बना दूं तो कहना

आप से हमारी अपेक्षाऐं :–

1. कहते हैं रामायण में लिखा है कि सत्संग के बिना 'राम' नहीं मिलते। सत्संग का मतलब सन्तों का संग, 'रामराज्य आहवाहन मिशन' को एक संत मानें तथा ऐसी व्यवस्था बना लें कि निरन्तर उसका आपके जीवन में संग बना रहे, आपकी गहृस्थी या कोई विचार उलझे तो यह आपकी उसको श्रीराम बुद्धि के अनुसार सुलझाने में मदद करे।
2. आप भी अन्य सब लोगों के लिए सत्संग बनें तथा उनको भी इस सुन्दर सी राह पर रखें कहते हैं जो बोओगे वही काटोगे, जो दोगे वही पाओगे, अपने आस–पास, अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों की बुद्धि को भी सुन्दर बुद्धि बनाने का प्रयास करें।
3. आप इस मिशन पर विश्वास करें कि यह सच्चा है क्योंकि यह सिखाने निकला है सच की राह, सच्ची सच की राह क्योंकि अन्त भला तो सब भला और अंत में तो जीत सच की राह की ही होती है तथा लम्बे समय तक तो सच ही टिकता है, सच कभी परेशानियां नहीं देता, यह हमारा भ्रम है बस सिर्फ हमें लगता है मगर यह हमेशा के लिए हमें आने वाली परेशानियों से बचा लेता है। सीखें 'सच्ची सच की राह'।
4. आप अपने साम्राज्य, राज्य, घर, दुकार में एक सुबह की, और एक शाम की पूजा (प्रार्थना) अवश्य करें जिसमें अपने धर्मानुसार इस ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति 'परमात्मा' के लिए दीपक जलाऐं उनकी आरती करें उनका ध्यान करें, उनसे प्रार्थना करें। कोशिश करें आपके राज्य के सभी लोग यथा सम्भव, सुखानुसार उसमें शामिल हों, शरिक हों ताकि हम और हमारे राज्य के सभी लोगों को, क्योंकि यह राज्स परमात्मा की रोज नियम से पूजा, प्रार्थना करता है, परमात्मा की कृपा पाने के अधिकारह हो सकें, राजा का कर्तव्य है ऐसी व्यवस्था बना देना।
5. राजा का कर्तव्य है कि कहीं भी लोगों के मनों में कोई दबे हुए शिकवे, शिकायत न रहें जो Communication Gap से हो जाते है व्यवस्था बनायें। सम्भव है तो रोज खाने पर, पूजा